भारत सरकार

पर्यटन मंत्रालय

राज्य सभा

लिखित प्रश्न सं. 778

गुरूवार, 5 फरवरी, 2026/16 माघ, 1947 (शक)

को दिया जाने वाला उत्तर

पर्यटन की संधारणीयता

778 डा. अशोक कुमार मित्तल:

क्या **पर्यटन** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि:

(क) क्या पर्यटन का विकास की पहलें पर्यावरणीय संधारणीयता और स्थानीय समुदाय की भागीदारी को पर्याप्त रूप से संबोधित करती हैं, यदि हाँ, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है और यदि नहीं, तो इसके क्या कारण हैं;

(ख) क्या पर्यटक स्थलों पर सुरक्षा, स्वच्छता और अवसंरचना मानकों की समय-समय पर समीक्षा की जाती है, यदि हाँ, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है और यदि नहीं, तो इसके क्या कारण हैं;

(ग) क्या पर्यटन से होने वाले वृद्धि के लाभ स्थानीय हितधारकों और छोटे सेवा प्रदाताओं को प्राप्त हो रहे हैं, यदि हाँ, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है और यदि नहीं, तो इसके क्या कारण हैं; और

(घ) पर्यटन संवर्धन को पर्यावरण संरक्षण और सांस्कृतिक संरक्षण के साथ संतुलित करने के लिए क्या कदम उठाए गए हैं?

उत्तर

पर्यटन मंत्री (श्री गजेन्द्र सिंह शेखावत)

(क) से (घ): पर्यावरणीय संधारणीयता, स्थानीय समुदाय की सहभागिता, सुरक्षा, स्वच्छता आदि से संबंधित पहलुओं सहित पर्यटन विकास और संवर्धन मुख्य रूप से संबंधित राज्य सरकार/संघ राज्यक्षेत्र प्रशासन के अधिकार क्षेत्र में आता है। तथापि, पर्यटन मंत्रालय अपनी विभिन्न योजनाओं के तहत देश में पर्यटन अवसंरचना एवं अनुभवों के विकास के लिए वित्तीय सहायता प्रदान करता है। यह वित्तीय सहायता राज्य सरकारों/संघ राज्यक्षेत्र प्रशासनों से योजना दिशानिर्देशों एवं सरकारी निदेशों के अनुरूप परियोजना प्रस्तावों की प्राप्ति, निधियों की उपलब्धता, पारस्परिक प्राथमिकता आदि के आधार पर राज्य सरकारों/संघ राज्यक्षेत्र प्रशासनों को प्रदान की जाती है। परियोजनाओं के तहत मंजूरी के लिए विचारार्थ घटकों में परियोजना की आवश्यकता के अनुरूप स्थायित्व, सुरक्षा, स्वच्छता आदि से संबंधित कारक भी शामिल हैं।

मंत्रालय ने देश में स्थायी और उत्तरदायी पर्यटन स्थलों के विकास पर फोकस के साथ वर्ष 2022 में स्वदेश दर्शन योजना को स्वदेश दर्शन 2.0 के नाम से नया रूप दिया और देश में 2208.31 करोड़ रु. की 53 परियोजनाओं को मंजूरी दी है। इस योजना में इस बात को रेखांकित किया गया है कि पर्यटन के

नकारात्मक प्रभावों को कम करने और सकारात्मक प्रभावों को अधिकतम करने के लिए, स्थायी और उत्तरदायी पर्यटन प्रथाएं महत्वपूर्ण हैं। यह योजना विभिन्न परियोजनाओं एवं पहलों में स्थायी और उत्तरदायी पर्यटन प्रथाओं के कार्यान्वयन पर केंद्रित है और पर्यावरणीय संधारणीयता, सामाजिक-सांस्कृतिक स्थिरता और आर्थिक स्थिरता सहित स्थायी पर्यटन के सिद्धांतों को अपनाने के लिए भी प्रोत्साहित करती है। इसमें गंतव्यों के विकास के लिए परियोजनाएं तैयार करते समय स्थानीय समुदायों और हितधारकों से परामर्श करना, नवीकरणीय ऊर्जा, पर्यावरण के अनुकूल सामग्री के उपयोग, सुलभ अवसंरचना का विकास, पर्यटकों को पर्यावरण सम्मान के प्रति संवेदनशील बनाना एवं उत्तरदायी व्यवहार को प्रोत्साहित करना भी शामिल है।

पर्यटन मंत्रालय ने पर्यटन मूल्य श्रृंखला के सभी बिंदुओं पर पर्यटक अनुभव को बढ़ाने के लिए गंतव्य का समग्र विकास करने के विचार से स्वदेश दर्शन 2.0 योजना के तहत एक पहल के रूप में 'चुनौती आधारित गंतव्य विकास' को शुरू किया, जो गंतव्यों को स्थायी और उत्तरदायी स्थलों के रूप में परिवर्तित करने पर भी केंद्रित है। मंत्रालय ने तदनुसार इस पहल के तहत देश में लगभग 698 करोड़ रु. की 38 परियोजनाओं को मंजूरी दी है।

पर्यटन मंत्रालय समय-समय पर अपनी विभिन्न योजनाओं के तहत स्वीकृत परियोजनाओं की प्रगति की समीक्षा करता है और राज्य सरकारों/संघ राज्यक्षेत्र प्रशासनों को इन परियोजनाओं के सुचारु रूप से प्रचालन एवं प्रबंधन के लिए प्रोत्साहित करता है ताकि इससे होने वाले लाभ स्थानीय समुदाय और हितधारकों तक पहुंच सके।

मंत्रालय ने सतत पर्यटन के लिए राष्ट्रीय कार्यनीति जारी की है, जिसका उद्देश्य भारतीय पर्यटन क्षेत्र में स्थिरता को मुख्यधारा में लाना और प्राकृतिक एवं सांस्कृतिक संसाधनों की सुरक्षा करते हुए अधिक अनुकूलित, समावेशी, कार्बन-तटस्थ एवं संसाधन-कुशल पर्यटन को सुनिश्चित करना है और इस पहल में प्रमुख हितधारकों में गैर-सरकारी संगठन एवं स्थानीय समुदाय भी शामिल हैं।

मंत्रालय ने मिशन लाइफ के तहत पर्यटन क्षेत्र के लिए एक कार्यक्रम 'ट्रैवल फॉर लाइफ' (टीएफएल) की परिकल्पना की है, ताकि स्थायी पर्यटन के बारे में जागरूकता पैदा की जा सके और पर्यटकों एवं पर्यटन व्यवसायों को प्रकृति से समन्वय करने वाली स्थायी प्रथाओं को अपनाने के लिए प्रेरित किया जा सके। इस कार्यक्रम का उद्देश्य एक स्थायी, उत्तरदायी और अनुकूलित पर्यटन क्षेत्र के विकास की दिशा में पर्यटन क्षेत्र में संधारणीयता को मुख्यधारा में लाना है।

*****